आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 29.07.2016) ■ अंक-600 ■ तारीख- 30 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण पक्ष -11 ■ शनिवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

शिक्षा

वास्तव में यह विस्तृत ब्रह्मांड महागुरू की लीला–स्थली है और मनुष्य है इसका एक शिष्य। आकाश–सूर्य तथा चन्द्रमा, प्रत्येक प्राणी और वस्तु, प्रत्येक कर्म तथा क्रिश, सभी मनुष्य को कुछ न कुछ शिक्षा प्रदान करते हैं।& I R; I kb ckck

सत्संग

सभी को अपनी निन्दा बुरी लगती है, प्रशंसा अच्छी। विचार करें निन्दा करने वाला दूसरा है, उस पर हमारा वश नहीं चलता, उसे हम रोक नहीं सकते। उससे द्वेष करने में, उसे बुरा समझने में हमारा लाभ नहीं है। निन्दा करने वाला हमारे पापों का नाश करता है।

जो किसी को दुःख नहीं देता, उसके द्वारा दूसरों की सेवा शुरू हो गयी। जो किसी को दुःख नहीं देता, उसको देखने से पुण्य मिलता है।

ru dj eu dj opu dj] nr u dkg n[kA
ry lh ikrd gjr g] n[kr mudk e[kAA

अन्न, जल और वस्त्र देने में सुपात्र–कुपात्र का विचार करोगे तो खुद कुपात्र बन जाओगे। पापी को उतना अन्न दो, जिससे वह जी जाय। धन, कन्या आदि देने में सुपात्र देखना चाहिये।

सुविचार

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं। &f'ko [kMk

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

& vYcVZ vkbLVhu

हर एक चीज में खूबसूरती होती है, लेकिन हर कोई उसे नहीं देख पाता। &dU¶;f'k; l

भगवान ने मनुष्य को अपने समान ही बनाया, पर दुर्भाग्य से इन्सान ने भगवान को अपने जैसा बना डाला।

&egkRek xk/kh

अब घर बैठे पाइए काशी विश्वनाथ व महाकालेश्वर का प्रसाद

शिवभक्त अब काशी विश्वनाथ और उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर का प्रसाद घर बैठे स्पीड पोस्ट से मंगवा सकते हैं। निदेशक (डाक सेवाएं) कृष्णकुमार यादव ने बताया कि काशी विश्वनाथ मंदिर के प्रसाद के लिए 61 रुपए का मनीआर्डर प्रवर डाक अधीक्षक, वाराणसी (पूर्वी), उत्तर प्रदेश के नाम भेजना होगा। इसके बदले मंदिर ट्रस्ट भभूति, रुद्राक्ष, भगवान शिव की लेमिनेटेड फोटो और शिव चालीसा भेजेगा। उज्जैन के प्रसिद्ध महाकालेश्र ज्योतिर्लिंग मंदिर के प्रसाद के लिए प्रशासक, श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबन्धन कमेटी, उज्जैन को मनीआर्डर भेजना होगा। वहां से स्पीड पोस्ट से 200 ग्राम ड्राई फ्रूट, 200 ग्राम लड्डू, भभूति और भगवान श्रीमहाकालेश्वर का चित्र आएगा। कई हजारों वर्षों पुराना बनारस का काशी विश्वनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

ऐसा माना जाता है कि एक बार इस मंदिर के दर्शन करने और पवित्र गंगा में स्नान कर लेने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मंदिर में दर्शन करने के लिए आदि शंकराचार्य, सन्त एकनाथ रामकृष्ण परमहंसए स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद सरस्वती व गोस्वामी तुलसीदास सभी का आगमन हुआ हैं। यहां पर सन्त एकनाथ ने वारकरी सम्प्रदाय का महान ग्रन्थ श्रीएकनाथी भागवत लिख कर पूरा किया और काशी नरेश व विद्वानों ने उस ग्रन्थ की हाथी पर से शोभायात्रा खुब धूमधाम से निकाली। महाशिवरात्रि की मध्य रात्रि में प्रमुख मंदिरों से भव्य शोभा यात्रा ढोल नगाड़े इत्यादि के साथ बाबा विश्वनाथ के मंदिर तक जाती है।

भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मध्यप्रदेश राज्य के उज्जैन नगर में स्थित महाकालेश्वर भगवान का प्रमुख मंदिर है। पुराणों, महाभारत महाकाव्य और कालिदास जैसे महाकवियों की रचनाओं में इस मंदिर का मनोहर वर्णन मिलता है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेश्वर महादेव की पुण्यदायी महत्ता है। ऐसी मान्यता है कि इसके दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में उज्जयिनी की चर्चा करते हुए इस मंदिर की प्रशंसा की है। यहां जो भी शासक रहे, उन्होंने इस मंदिर के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण की ओर विशेष ध्यान दिया। इसीलिए मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है। प्रतिवर्ष और सिंहस्थ के पूर्व इस मंदिर को सुसज्जित किया जाता है।सिंहस्थ पर्व स्नान की स्थापनाए जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

भारतीय समाजवाद के पितामह आचार्य नरेंद्र देव

''समाजवाद का ध्येय वर्गहीन समाज की स्थापना है। समाजवाद प्रचलित समाज का इस प्रकार का संगठन करना चाहता है कि वर्तमान परस्पर विरोधी स्वार्थ वाले शोषक और शोषित, पीड़क और पीड़ित वर्गों का अंत हो जाएय वह सहयोग के आधार पर संगठित व्यक्तियों का ऐसा समूह बन जाए जिसमें एक सदस्य की उन्नति का अर्थ स्वभावतः दूसरे सदस्य की उन्नति हो और सबमिल कर सामूहिक रूप से परस्पर उन्नति करते हुए जीवन व्यतीत करें।''

आचार्य जी का जन्म आज के दिन 1889 में यूपी के सीतापुर शहर में हुआ था जहां उनके पिता बलदेव दास वकालत करते थे। उनके पूर्वज स्यालकोट से उत्तर प्रदेश आकर बसे थे। फैजाबाद में उनके दादा कुंजबिहारी लाल का बर्तनों का व्यापार था। आचार्य जी के जन्म के दो साल बाद दादा का निधन होने पर उनके पिता सीतापुर से फैजाबाद आ गए और वहीं वकालत करने लगे।

आचार्य जी का असली नाम अविनाशी लाल था। बाद में संस्कृत के विद्वान माधव मिश्र ने उनका नाम नरेंद्र देव रखा। उनकी स्कूली शिक्षा फैजाबाद में और इतिहास विषय लेकर उच्च शिक्षा इलाहाबाद और बनारस में हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने वकालत की परीक्षा भी उत्तीर्ण की और कुछ दिन वकालत की भी। लेकिन उनका अध्ययनशील मन वकालत में नहीं रमा और 1921 में काशी विद्यापीठ में इतिहास के शिक्षक हो गए। उन्होंने इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, संस्कृति का गहन अध्ययन किया। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत पाली, जर्मन, फ्रैंच और अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता आचार्य जी का अध्ययन अत्यंत विशाल और अध्यापन शैली अत्यंत सरल थी।

ऐसा कहा जाता है कि आचार्य जी मूलतः शिक्षक थे। एक राजनेता की महत्वाकांक्षा और रणनीतिक कौशल उनमें नहीं था, न ही उन्होंने उस दिशा में अपनी प्रतिभा को लगाया। वे काशी विद्यापीठ में अध्यापन करने के बाद 1947 से 1951 तक लखनऊ विश्वविद्यालय के और 1951 से 1953 तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। उनका अपना जीवन सादगीपूर्ण था और वे गरीब छात्रों की आर्थिक मदद करते थे। छात्रों के साथ उनका रिश्ता बहुत ही प्रेरणादायी था। उनके शिष्यों में भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री, वरिष्ठ नेता कमलापति त्रिपाठी और सोशलिस्ट नेता चंद्रशेखर थे। चंद्रशेखर आचार्य जी की प्रेरणा से राजनीति में आए और अंत तक उन्हें अपना गुरु मानते रहे। एक अध्यापक, चिंतक और समाजवादी नेता के रूप में आजादी और राष्ट्र निर्माण में आचार्य जी का अप्रतिम योगदान है।

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

❖वाड़ फला शिविर की यादे ❖

भगवान क्या जीमें होंगे? जीमते तो हम हैं भगवान कभी जीमते हैं? नहीं, वास्तव में भगवान जीमते हैं, जीमाने वाला होना चाहिये। कर्मा बाई होनी चाहिये जो खिचड़ी तो खिला दे, कोई सबरी तो होनी चाहिये ना, जो भगवान को जूठे बेर खिला दे। विदुर पत्नी जी को धन्यवाद है, जो उल्टे पाटिये पर बिठाकर केले के पते खिला देवे केला का छिल्का खिला देवे। ये ही धर्म, यही सत्य, यही अटूट गीताजी का ज्ञान, यही वेदों के ऋचा वेदों के ब्राह्मण, यही उपनिदेशों के कवर।

पाली – मारवाड़ का जीवन 1976 तक का, उस समय रविवार को हमारी ड्युटी लगती थी जो, डिलीवरी बाबू सुबह 4.00 बजे से 3.00 बजे उठ जाते थे, लगन थी 4. 00 बजे जाना है, तो पहले जाना चाहिये। एक मिनट भी ज्यादा नहीं होना चाहिये। आज कल तो हम किसी के घर पहले नहीं जाते, यदि समय से पहले चले जायें तो भी अस्त–व्यस्त हो जाता है। उनके मन एक तस्वीर बनती है कि चार बजे बाबूजी आयेंगे तो उससे पहले भी नहीं, चार बजे से विलम्ब पर भी नहीं।

हमारे एक साहब थे, अभी भी हैं। उन्होंने उनके आदरणीय को पूछा–साहब, आप फ्लाइट तो बहुत चूकते होंगे–सर। बोले क्यों भाई? मैं तो एक भी फ्लाइट नहीं चूका। अच्छा–अच्छा बढ़िया बात है साहब। आप ट्रेन तो चूक जाते होंगे? नहीं भाई, मैं तो ट्रेन आने से आधा घण्टा पहले ही पहुँच जाता हूँ। बोले–साहब, हमारे कार्यक्रम में आप 3 घंटे लेट क्यों आते हो साहब? हमारे पर भी दया करो ना। जब आप फ्लाइट चूकते नहीं, ट्रेन चूकते नहीं, तो आप हमारे कार्यक्रम में लेट क्यों होते हो? हमारा कार्यक्रम 11.00 बजे का है, तो आप ग्यारह बजे पधारो ना। 4–5 मिनट की देरी हो तो चलता है। लापरवाही, जहाँ परवाह नहीं हो वहाँ लापरवाही होती है। कहते हैं भूल गये, इसलिये क्योंकि चिन्ता ही नहीं थी, बाकी तो खुद की जरूरत की बात तो खूब याद रह जाती है। मैं भी बहुत भूलता हूँ, लापरवाही करता हूँ, लापरवाही से ही तो भूलते हैं।

डेपुटेशन पर पाली रोड़ के अलावा भी कई जगह गये। बड़ा अच्छा जीवन रहा, रेल्वे स्टेशन जाते थे। वहाँ की धर्मशाला में दो–तीन बार नेत्र शिविर लगा था, वहाँ पर सेवा करने जाता था। पाली में आज भी हमारे बहुत अच्छे मित्र हैं, जो वृद्धाश्रम चला रहे हैं। उनके पूज्य पिता जी पूर्व में एम.एल.ए. रहे हैं। बहुत अच्छा चल रहा है, उनको धन्यवाद है। पाली जिले में नेत्र का बड़ा काम है, पाली सेवा मण्डल, पाली में हमारे मामा ससुरजी साहब श्रीमान् रतनलाल जी गर्ग साहब, उनको प्रणाम करते हैं हम बार–बार। उनकी सुपुत्री लाजो जी, उनके यहाँ दो–चार बार साथ–साथ भोजन किया। उनका एहसान नहीं भूल सकते, कभी एहसान नहीं भूलना चाहिये। यदि पाँच रूपये भी किसी ने उधार दिये हो, उनके पास गरीबी हो और आपके पास अमीरी हो तो उन पाँच रूपये को 100 बार लौटा देना चाहिये, तो भी उनका ऐहसान नहीं उतरेगा। यही भारतीय संस्कृति है, यही सब कुछ है, और कुछ भी नहीं है। हमारे आदरणीय केड़िया साहब, कपड़े के व्यापारी सम्बन्धी भी थे कमला जी के पीहर पक्ष में। हमारा एक डॉक्टर साहब से बड़ा प्यार रहा परिचय रहा। डॉ. दम्पति बड़ा स्नेह करते थे उनकी धर्म पत्नी भी डॉक्टर साहब पाली में मूलचन्द जी लोढ़ा साहब, उस जमाने में बड़े प्रसिद्ध हुए। रेल्वे स्टेशन पर उनकी मूर्ति भी लग रही है, पाली–मारवाड़ का बस स्टेन्ड, ऊपर होटल भी रही है। पास में भोजनालय, वहाँ हमने कई बार भोजन किया। और पाली में हम कई बार ढाबे पर भी भोजन करते थे। एक पण्डित जी का ढाबा था वहां भोजन करते थे। उनकी एक बड़ी विचित्र आदत थी, वो गर्म फुल्के किसी को नहीं परोसते थे।

क्रमशः आगले अंक में...

तप से अधिक महत्व है- सत्संग का

एक बार महर्षि वशिष्ठ महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में गए। महर्षि विश्वामित्र ने वशिष्ठ का बड़ा स्वागत – सत्कार और आतिथ्य किया। जब वशिष्ठ जी चलने लगे तो विश्वामित्र ने उन्हें अपनी दस वर्ष की तपस्या का पुण्यफल उपहारस्वरूप भेंट किया।

बहुत दिनों बाद संयोगवश विश्वामित्र जी महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में पहुंचे। उनका भी वैसा ही स्वागत – सत्कार हुआ। जब विश्वामित्र चलने लगे तो वशिष्ट जी ने उन्हे अपने एक दिन के सत्संग का पुण्यफल भेंट किया। विश्वामित्र यह सोचकर मन – ही – मन खिन्न हो गए कि उन्होंने तो अपनी दस वर्ष की तपस्या का पुण्यफल दिया था, जबकि वशिष्ट जी ने एक दिन के सत्संग का तुच्छ फल दिया। वे विचार करने लगे कि कहिं वशिष्ट जी की अनुदरता के पीछे मेरे प्रति तुच्छता का भाव तो नहीं है ?

वशिष्ठ जी उनके इस हीन मनोभाव को ताड़ गए और उसका समाधान करने के लिए उन्हे साथ लेकर विश्व – भ्रमण पर निकल पड़े। चलते – चलते दोनों महर्षि वहां पहुंचे जहा शेषनाग जी अपने फन पर पृथ्वी का बोझ लादे बैठे थे। दोनो ऋषियों ने उन्हें प्रणाम किया व उनके समीप बैठ गए। तब उपयुक्त अवसर देखकर वशिष्ट जी ने शेषनाग जी से पूछा – ''भगवान, दस वर्ष का तप अधिक मुल्यवान है या एक दिन का सत्संग ?''

शेषनाग जी बोले –''ऋषिवर, इसका समाधान वाणी से करने की अपेक्षा प्रयोग से करना ज्यादा ठीक रहेगा। मैं सिर पर इतना भार लिए बैठा हूं, जिसके पास तप – बल है, वह थोड़ी देर के लीए इस भार को अपने ऊपर ले ले।''

विश्वामित्र जी का अपने तप बल पर अभिमान था। तप के उसी संचित बल के आधार पर उन्होंने पृथ्वी का बोझ अपने ऊपर लेने का प्रयास किया, लेकिन उठाना तो दूर, वे उसे हिला भी न सके। अब वशिष्ठ जी से कहा कि वे एक दिन के सत्संग – बल से पृथ्वी को उठाएं। वशिष्ठ जी ने यत्न किया और पृथ्वी का भार आसानी से अपने ऊपर उठा लिया।

तब शेषनाग जी ने कहा – ''ऋषिवर, निःसन्देह तप – बल की महत्ता बहुत है, लेकिन उसकी प्रेरणा और प्रगति का स्त्रोत सत्संग ही है। इसलिए उसकी महत्ता तप से अधिक है।''

अब विश्वामित्र जी की समस्या का समाधान हो गया कि महर्षि वशिष्ट ने न तो कम मूल्य की वस्तु भेंट की और न ही उनका तिरस्कार किया। सत्संग से तप की प्रेरणा मिलती है। इसलिये सत्संग को तप से अधिक महत्व दिया गया है।

सम्पादकीय

इंसान वही जो दूसरे इंसान के काम आए। यूं कहने को तो पूरी दुनियाँ इंसानों से भरी पड़ी है, मगर यदि हममें मानवीय संवेदनाएँ नहीं, तो फिर हम मानव कहलाने के अधिकारी कैसे? हमारे घर में मोमबत्ती अवश्य पड़ी रहती है, जिसे हम बिजली गुल हो जाने पर अक्सर जलाया करते हैं। मोमबत्ती के भीतर एक धागा होता है, जो स्वयं जलकर हमें प्रकाश देता है। जब धागा जलता है तो मोम पिघलकर...... द्रवीभूत होकर उसका सम्पूर्ण साथ देते–देते अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है। आखिर कितनी करुणा है बेजान धागे और निर्जीव मोम में..... अपने साथी रहे जलते धागे का साथ देने को मोम का रोम–रोम जल उठता है। फिर हम तो सजीव और प्राणी जगत के हिस्से हैं, हममें तो जिन्दा दिल धड़कता है। भला हम अपनी मानवीय संवेदनाएँ कैसे खो सकते हैं, इंसानियत को कैसे भूल सकते हैं? करुणा और प्रेम से ही हमारे समाज एवं राष्ट्र में बड़े पैमाने पर भामाशाहों द्वारा दुःखियों, पीड़ितों, असहायों, वृद्धों, मासूम विकलांग बच्चों एवं निर्धन लाचारों की सेवा–सहायता हेतु दान–सहयोग दिया जा रहा है। दान देने वाले जिस भावना से दान देते हैं, वैसा ही फल उन्हें मिलता है। आध्यात्मिक महर्षियों ने मनुष्य के लिए दान की महत्ता अनेक कारणों से स्वीकार की है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस संसार में मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जिसके पास विवेक है। इस कारण वह अपनी आवश्यकताओं से अधिक संग्रह करता है। कुछ लोगों के अधिक संग्रह कर लेने से समाज का एक हिस्सा ऐसा भी रह जाता है जिनकी भौतिक उपलब्धियाँ कम रह जाती है। एक संग्रह करता है तो दूसरा अभाव झेलता है। इससे समाज में वैमनस्य का भाव भी फैलता है। यही कारण है कि अधिक धन वालों को हमेशा ही दान कर समाज में अपना प्रभाव बढ़ाने के साथ ही आध्यात्मिक शांति के साथ जीवन व्यतीत करने की राय दी जाती है।

fn0;kxk us dh f'kokjk/kuk

&fn0;kx efgykvks d s fy, yxs lkou d s >wys

mn; iqjA सांवन के सोमवार पर नारायण सेवा संस्थान में संस्थापक कैलाश 'मानव' व अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल के सानिध्य में दिव्यांग जन ने भगवान शिव की पूजा की ओर विश्व कल्याण के स्वास्थ्य की कामना की। निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल ने बताया कि देश के विभिन्न भागों से निःशुल्क ऑपरेशन के लिए आये दिव्यांगों ने भगवान शिव से अपने आरोग्य ओर मुख्यधारा के साथ देश के विकास में अपने योगदान की क्षमता प्रदान करने की प्रार्थना भी की। इस अवसर पर दिव्यांग महिलाओं के लिए विशेष रूप से सावन के झूले लगाये गए। जिन पर इन्होंने साधिकाओं के साथ आनन्द लिया। संस्थान के पोलियो अस्पतालों में प्रसाद वितरण किया गया।

मेघालय पर्यटन स्थल

शिलॉन्ग, मेघालयः मेघालय का अर्थ है बादलों का घर। यहां आकर जीवन की हर चिंता समाप्त हो जाती है। मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग भारत का सबसे खूबसूरत हिल स्टेशन है। इसे पूर्व का स्कॉटलैंड कहा जाता है। शिलॉन्ग में पूरी दुनिया का सबसे ऊंचा वॉटरफॉल है जिसे देखने दनियाभर से लोग आते हैं। खूबसूरत खासी पहाड़ियों के बीच बसा यह स्थान भारत के प्रसिद्ध ब्लूस मैन, लाउ मैजॉ (सिंगर और गिटारिस्ट) का घर भी है।

शिलॉन्ग में अनेक दर्शनीय स्थल है जैसे एलीफेंटा फॉल, शिलॉन्ग व्यू पॉइंट, लेडी हैदरी पार्क, वार्ड्स लेक, गोल्फ फोर्स, संग्रहालय, कैथोलिक, केथेड्रल, आर्चरी और एंगलीकेन सिमेंटरी चर्च।

चेरापूंजी का स्थानीय और आधिकारिक नाम सोहरा है जो शिलॉन्ग से 56 किलो मीटर की दूरी पर है। यह खासी पहाड़ी के दक्षिणी किनारें पर स्थित एक छोटा सा कस्बा है। चेरापूंजी 12 महीने ही घनी बारिश के कारण विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। चेरापूंजी के कुछ महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं माकडॉक–डिमपेप घाटी का दृश्य जो शिलॉन्ग और चेरापूंजी के बीच स्थित है, सोहरा बाजार और रामकृष्ण का मंदिर, संग्रहालय, नोखालीकाई जल प्रपात, प्रथम प्री साइबेरियन चर्च, वेल्श मिशनरियों की दरगाहें, एंगलिकन सिमेंटरी, इको पार्क डबल डेकर रुट ब्रीज, चेरापूंजी मौसम विज्ञान वेधशाला।

शिलॉन्ग से 35 किलोमीटर दूर अमरोही में हवाई अड्डा है। दिल्ली से 1490 किलोमीटर दूर है शिलॉन्ग।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /keZ Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i`"B½

समानता के भाव

अभी आपने सोचा अरे! कहाँ कैलाश जी वाड़ाफला जा रहे थे। कहाँ बस की बात कर रहे थे, बीच में जी भाई साहब। मैं बात तो कर रहा था। 15 दिसम्बर, 1985 की लेकिन मैं अभी बोल रहा हूँ। 21 तारीख, सितम्बर 2015 को, हमारे सुनिल पंडित जी बहुत अच्छे समाजसेवी, समाज–सेवा में अग्रणी और परम् पुज्य दयालु जी महाराज! तो सुनिल पंडित जी को रात को बुखार था, अभी जैसे ही मुझे मालुम पड़ा तो तुरन्त महेन्द्र को दौड़ाया अमेरिकन हॉस्पिटल, उधर अनिरूद्ध को बोला कोई भी गाड़ी करके अमेरिकन हॉस्पिटल आओ। कुलदीप अभी इसलिये गया, क्योंकि मनुष्य महान हैं। धन–वैभव तो यहीं रह जायेगा।

अभी प्रशान्त भैय्या जन्म–दिन पर आशीर्वाद लेने मेरे पास आये–सेवाधाम। उन्होंने आज ही एक महापुरूष की जीवनी पढ़ी थी। उनकी कथा बताई आंगिस्टीन करके उन्होंने बहुत पैसा कमाया। हाय पैसा, हाय पैसा, हाय पैसा। करोड़ों रूपये कमाए। अब इनको इन्वेस्ट करूँगा, शेयर बढ़ेगा, बैंक इतना रूपया ब्याज देगा, एक करोड़ के पाँच करोड़, पाँच करोड़ के आठ करोड़, आठ करोड़ के बीस करोड़ और सोचा खूब आनन्द करूँगा। इतना पैसा मेरे पास। इसको मैं ऐसी जगह लगाऊँ जहाँ ज्यादा से ज्यादा ब्याज मिले और मौत आ गयी। काले–कलूटे यमराज के वेश में दूत आ गये। आप कौन, आप कौन। अरे! भई हम तो तेरे को लेने आये हैं। तेरा अन्त समय आ गया–चलो। अरे! अरे! क्या बात करते हो–महाराज! मुझे तो इतना पैसा इन्वेस्टमेंट करना हैं, मुझे उसके ब्याज का आनंद लेना हैं। मुझे उसकी कमाई का आनंद लेना हैं। आप मुझे अभी कैसे ले जा सकते हो? साल भर समय दे दो। मेरा आधा पैसा, आप को दे दूंगा। अरे! भई नहीं मिल सकता पन्द्रह दिन तो दे दो। नहीं–नहीं–नहीं क्या बात कर रहे हो? मैं मौत हूँ, मौत मालूम हैं। अच्छा, मुझे एक दिन दे दो, नहीं मिल सकता, अच्छा तीन मिनिट दे दो। पत्र लिखना चाहता हूँ और उन्होंने पूरे देश–दुनिया के नाम पत्र लिखा।

मेरे देश वासियों। मेरी जैसे गलती कभी मत करना, मैंने जीवन की सबसे बड़ी भूल की, कि पैसे को बचा–बचा के बहुत बचाया। सोचा कभी बाद में आनंद लूँगा। लेकिन मैंने बड़ी गलती कि, यदि मैं अपना स्वास्थ्य अच्छा रखता। मैंने अपनी बीमारी का भी ईलाज नहीं कराया–कंजूसी में। यदि मैं अपना स्वास्थ्य अच्छा रखता, यदि बच्चों को अच्छे संस्कार देता, यदि विकलांगों का ऑपरेशन करा लेता, नारायण सेवा संस्थान के साथ–साथ जहां और भी दुखी–दर्दी होते वहाँ पहुँच जाता। तो आज में सुखी–सुखी शान्त भाव से, बिना व्याकुल हुए मौत के साथ चला जाता, लेकिन अभी में व्याकुल हो के जा रहा हुँ। दो मिनिट तो मिले हैं, मेरे इस पत्र को बहुत समझना। मैं अब विदा ले रहा हूँ। बस 6:30 रवाना हो रही हैं। 2 घण्टा, पूरा 2 घण्टा, विलम्ब उस दिन से संकल्प लिया कि जब भी हम बस भाड़े पे करेंगे एडवांस दे के लिखवा लेंगे। कुछ तो डर रहे, उनको कि हमने लिख कर था दिया है, कि 300 रूपये एडवांस लिया हैं। इतनी बजे बस लगाएंगे, इतनी बजे तक, ये बात मैं इसलिये कह रहा हूँ जीव मत दुखाना, जब हम किसी व्यक्ति का जी दुखाते हैं, तो समझो भगवान का जी दुखाया।

किसके लिये? क्यों? वचनों से, कर्म से हिंसा करते हो? भावों से ऐसा करते हो। मन वचन, कर्म कभी हिंसा नहीं करते हैं। बस रवाना हुई, हमेशा की तरह। ड्राईवर साहब के जो पीछे कि साईड में, एक लम्बा सा डण्डा होता हैं, शुरूआत का उसको मैंने पकड़ा अपनी बाह को उसमें लपेटा ओर बोला, बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय, गणेश भगवान की जय।

यहाँ से उस समय 19 महानुभाव। कमला जी, प्रशान्त भैय्या, कल्पना जी। हमारे बड़े भाई सदृश्य और टेलीफोन विभाग में मेरे अधिकारी मेरे से बहुत सीनियर बाद में तो जब मैं सहायक एकाउन्ट ऑफिसर था। पद के हिसाब से मेरे बॉस थे। मैं रिर्पोट भी उन्हीं को करता था। आर.एल. गुप्ता जी, राम जी लाल गुप्ता जी खण्डेलवाल साहब, हमारी नर्बदा भाभी जी, उनकी धर्म–पत्नी जी, गुप्ता जी की धर्म–पत्नी। उन दोनों के सुपुत्र ओम–प्रकाश जी, ओम–प्रकाश की बहना सुनिता जी, छोटी बहना रेणु जी, हमारे पास के सतीश भैय्या, सतीश भैय्या के माता जी –पिता जी शान्ता बाई। जो अभी भी इतने वर्ष हो गये 30 वर्ष, शान्ता बाई अभी भी आदरणीया, नारायण सेवा की प्रमुख सदस्या हैं, सीनियर और कमला जी का बहुत साथ देती हैं, मेरा, सबका साथ देती हैं।

गिरिराज मंदिर–गोवर्धन धाम

मथुरा और वृन्दावन में भगवान श्री कृष्ण से जुडे अनेक धार्मिक स्थल है। किसी एक का स्मरण करों तो दूसरे का ध्यान स्वतरू ही आ जाता है। मथुरा के इन्हीं मुख्य धार्मिक स्थलों में गिरिराज धाम का नाम आता है सभी प्राचीन शास्त्रों में गोवर्धन पर्वत की महिमा का वर्णन किया गया है।

xko/ku dk eºRo & गोवर्धन के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है। कि गोवर्धन पर्वत गोकुल पर मुकुट में जडी मणि के समान चमकता रहता है।

गिरिराज जी के अंगों की विभिन्न स्थितियां बताई गई है। जहाँ गोवर्धन पर रास में श्री राधा ने श्रृंगार धारण किया था, वह स्थान "श्रृंगारमंडल" के नाम से प्रसिद्ध है। श्रृंगारमंडल के अधोभाग में श्री गोवर्धन का 'मुख' है, जहाँ पर भगवान ने व्रज वासियों के साथ अन्नकूट का उत्सव किया था।

'मानसीगंगा' गोवर्धन के दोनों 'नेत्र' है, 'चन्द्रसरोवर' 'नासिका', 'गोविंदकुण्ड' 'अधर', और 'श्रीकृष्ण कुण्ड' 'चिबुक' है,'राधाकुंड' गोवर्धन की 'जिव्हा', और ललिता सरोवर 'कपोल' है। गोपाल कुण्ड 'कान' और कुसुम सरोवर 'कर्णान्तभाग' है। जिस शिला पर मुकुट का चिन्ह है उसे गिरिराज का 'ललाट' कहते है। चित्रशिला उनका 'मस्तक' और वादिनी–शिला उनकी 'ग्रीवा' है। कंदुक तीर्थ उनका 'पार्श्व भाग' है। और उष्णीष–तीर्थ को उनका 'कटि प्रदेश' बतलाया जाता है।

द्रोंण–तीर्थ 'पृष्ठ देश' में और लौकिक–तीर्थ 'पेट' में है। कदम्ब–खंड 'हदय–स्थल' में है। श्रृंगारमंडल तीर्थ उनकी 'जीवात्मा' है श्री कृष्ण चरण–चिन्ह महात्मा गोवर्धन का 'मन' है। हस्तचिन्ह तीर्थ 'बुद्धि' और ऐरावत चरण–चिन्ह उनका 'चरण' है। सुरभि के चरण चिन्हों में महात्मा गोवर्धन के 'पंख' है। पुच्छ–कुण्ड में 'पूंछ' की भावना की जाति है। वत्स–कुण्ड में उनका 'बल', रूद्र कुण्ड में 'क्रोध' और इंद्र सरोवर में 'काम' की स्थिति है। इस प्रकार गिरिराज जी के ये विभिन्न अंग है।

जो समस्त पापों को हर लेने वाले है। जो नर श्रेष्ठ गिरिराज जी की इन विभूति को सुनता है वह योगी दुर्लभ 'गोलोक' नामक परम धाम में जाता है।

fxfjjkt efnj dFkk & गिरिराज मंदिर के विषय में पौराणिक मान्यता है, कि श्री गिरिराज को हनुमान जी उत्तराखंड से ला रहे थे उसी समय एक आकाशवाणी सुनकर वे पर्वत को ब्रज में स्थापित कर दक्षिण की और भगवान श्री राम के पास लौट गये थे। इन्हीं मान्यताओं के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के समय में यह स्थान प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा रहता था। यहां अनेक गुफाएं होने का उल्लेख किया गया है।

xko/ku /kke dFkk & गोवर्धन धाम से जुडी एक अन्य कथा के अनुसार गोकुल में इन्द्र देव की पूजा के स्थान पर गौ और प्रकृति की पूजा का संदेश देने के लिये इस पर्वत को अंगूली पर उठा लिया था. कथा में उल्लेख है, कि भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र की परम्परागत पूजा बन्द कर गोवर्धन की पूजा ब्रज में की थी।

ब्रज में प्रत्येक वर्ष इन्द्र देव की पूजा का प्रचलन था इस पूजा पर ब्रज के लोग अत्यधिक व्यय करते थें. जो वहां के निवासियों के सामर्थ्य से कहीं अधिक होता था. यह देख कर भगनान श्रीकृष्ण ने सभी गांव वालों से कहा कि इन्द्र पूजा के स्थान पर जो वस्तुएं हमें जीवन देती है। भोजन देती है। उन वस्तुओं की पूजा करनी चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण की बात मानकर ब्रज के लोगों ने उस वर्ष देव इन्द्र की पूजा करने के स्थान पर पालतु पशुओ, सुर्य, वायु, जल और खेती के साधनों की पूजा की। इस बात से इन्द्र देव नाराज हो गएं। और नाराज होकर उन्होनें ब्रज में भयंकर वर्षा की। इससे सारा ब्रज जल से मग्न हो गया। सभी दौडते हुए भगवान श्रीकृष्ण के पास आयें और इस प्रकोप से बचने की प्रार्थना की. भगवान श्री कृष्ण ने उस समय गोवर्धन पर्वत अपनी अंगूली पर उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। उसी दिन से गिरिराज धाम की पूजा और परिक्रमा करने से विशेष पुन्य की प्राप्ति होती है। गिरिराज महाराज के दर्शन कलयुग में सतयुग के दर्शन करने के समान सुख देते है। यहां अनेक शिलाएं है। उन शिलाओं का प्रत्येक खास अवसर पर श्रृंगार किया जाता है। करोडों श्रद्वालु यहां इस श्रृंगार और गोवर्धन के दर्शनों के लिये आते है। गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा कर पूजा करने से मांगी हुई मन्नतें पूरी होती है। जो व्यक्ति 11 एकादशियों को नियमित रुप से गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करता है। उसे मनोवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है।

यहां के मंदिरों में न कोई पुजारी है, तथा न ही कोई प्रबन्धक है। फिर भी सभी कार्य बिना किसी बाधा के पूरे होते है। यहां के एक चबूतरे पर विराजमान गिरिराज महाराज की शिला बेहद दर्शनीय है। इसके दर्शनों के लिये भारी संख्या में श्रद्वालु जुटते है। महाराज गिरिराज की शिला को अधिक से अधिक सजाने की यहां श्रद्वालुओं में होड रहती है। श्रृंगार पर हजारों–या लाखों नहीं बल्कि करोडों रुपये लगाये जाते है। यहां की वार्षिक सजावट का व्यय किसी बडे मंदिर में चढावे की धनराशि से अधिक होता है। यहां साल में चार बार विशेष श्रृंगार ओर छप्पन भोग लगाया जाता है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294–6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com